7

शिवानी

शिवानी का जन्म 17 अक्टूबर 1923 को विजया दशमी के दिन राजकोट (गुजरात) में हुआ था। इनका पूरा नाम गौरापंत शिवानी है, पर साहित्य जगत में ये शिवानी नाम से प्रसिद्ध हैं। इनके पिता अश्विनी कुमार पाण्डेय राजकुमार कॉलेज के प्राचार्य फिर माणबदर और रामपुर रियासत के दीवान भी रहे। इनके माता-पिता संगीतप्रेमी तथा कई भाषाओं के ज्ञाता थे। पितामह हरिराम पाण्डेय संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान थे। शिवानी की किशोरावस्था शांति निकेतन में बीता था। पर पति की असामयिक मृत्यु के पश्चात वे लखनऊ में रहने लगी। कुछ समय के लिए शिवानीजी अमेरिका में बसे अपने पुत्र के परिवार के बीच रहीं। उनका अंतिम समय दिल्ली में बीता, जहाँ 21 मार्च 2003 को वे परलोक सिधारीं।

शिवानीजी एक सशक्त लेखिका थी। उन्होंने कई उपन्यास, कहानियाँ, बाल उपन्यास तथा संस्मरण आदि लिखीं। उनकी पहली रचना 'नटखट' में प्रकाशित हुई थी। 'मैं मुर्गा हूँ' पहली बार 1951 में 'धर्मयुग' पत्रिका में छपी थी। '**सुनहु तात**' (कहानी), '**सोने दे**' (आत्मवृत्तात्मक आख्यान) तथा '**अतिथि**' (उपन्यास) उनकी बहुचर्चित रचनाओं में से हैं। लखनऊ से प्रकाशित 'स्वतंत्र भारत' का चर्चित स्तम्भ 'वातायन' की वे नियमित लेखिका थीं। साहित्य सेवा के लिए शिवाजी को भारत सरकार ने 1979 में पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किया था।

अपराजिता शीर्षक कहानी में शारीरिक रूप से अक्षम एक ऐसी महिला के जीवन पर आलोकपात किया गया है जो जीवन की विषम परिस्थितियों का सामना करती हुई अपराजिता बनी रही। शारीरिक रूप से अक्षम होने के कारण डॉ. चन्द्रा को सामान्य लोगों की तरह काम-काज करने में असुविधा होती थी। परन्तु उनके मन में असीम धैर्य और सुदृढ़ इच्छाशक्ति थी। उन्होंने जीवन में आनेवाली सभी बाधाओं और विकट परिस्थितियों का डटकर मुकाबला किया और उन पर विजय प्राप्त कर ली। विज्ञान के क्षेत्र में डॉ. चन्द्रा ने महत्वपूर्ण अवदान दिया। निरंतर साधना के बल पर वे प्रसिद्धि के शिखर पर पहुँच गईं। डॉ. चन्द्रा की जीवन गाथा केवल शारीरिक अक्षम लोगों के लिए ही प्रेरणा-स्रोत नहीं है, बल्कि उन सभी लोगों के लिए प्रेरणाप्रद है जो अपने लक्ष्य तक पहुँचने से पहले ही निराश होकर मार्ग में आनेवाली बाधाओं के समक्ष पराजय स्वीकार कर लेते हैं।

अपराजिता

कभी-कभी अचानक ही विधाता हमें ऐसे विलक्षण व्यक्तित्व से मिला देता है, जिसे देख स्वयं अपने जीवन की रिक्तता बहुत छोटी लगने लगती है। हमें तब लगता है कि भले ही उस अंतर्यामी ने हमें जीवन में कभी अकस्मात अकारण ही दंडित कर दिया हो किन्तु हमारे किसी अंग को हमसे विच्छिन्न कर हमें उससे वंचित तो नहीं किया। फिर भी हममें से कौन ऐसा मानव है जो अपनी विपत्ति के कठिन क्षणों में विधाता को दोषी नहीं ठहराता। मैंने अभी पिछले ही महीने, एक ऐसी अभिशप्त काया देखी है, जिसे विधाता ने कठोरतम दंड दिया है, किन्तु उसे वह नतमस्तक आनन्दी मुद्रा में झेल रही है, विधाता को कोसकर नहीं।

उसकी कोठी का अहाता एकदम हमारे बँगले के अहाते से जुड़ा था। अपनी शानदार कोठी में उसे पहली बार कार से उतरते देखा, तो आश्चर्य से देखती ही रह गई। कार का द्वार खुला, एक प्रौढ़ा ने उतरकर पिछली सीट से एक व्हील चेयर निकाल कर सामने रख दी और भीतर चली गई। दूसरे ही क्षण, धीरे-धीरे बिना किसी सहारे के, कार से एक युवती ने अपने निर्जीव निचले धड़ को बड़ी दक्षता से नीचे उतारा, फिर बैसाखियों से ही व्हील चेयर तक पहुँच उसमें बैठ गई और बड़ी तटस्थता से उसे स्वयं चलाती कोठी के भीतर चली गई। मैं फिर नित्य नियत समय पर उसका यह विचित्र आवागमन देखती और आश्चर्यचकित रह जाती - ठीक जैसे कोई मशीन बटन खटखटाती अपना काम किए चली जा रही हो।

धीरे-धीरे मेरा उससे परिचय हुआ। कहानी सुनी तो दंग रह गई। नियति के प्रत्येक कठोर आघात को अति अमानवीय धैर्य एवं साहस से झेलती वह बित्ते-भर की लड़की मुझे किसी देवांगना से कम नहीं लगी। मैं चाहती हूँ कि मेरी पंक्तियों को उदास आँखों वाला वह गोरा, उजले वस्त्रों से सज्जित लखनऊ का मेधावी युवक भी पढ़े, जिसे मैंने कुछ माह पूर्व अपनी बहन के यहाँ देखा था। वह आई.ए.एस. की परीक्षा देने इलाहाबाद गया। लौटते समय किसी स्टेशन पर चाय लेने उतरा कि गाड़ी चल पड़ी। चलती ट्रेन में हाथ के कुल्हड़ सहित चढ़ने के प्रयास में गिरा और पहिए के नीचे हाथ पड़ गया। प्राण तो बच गए, पर दायाँ हाथ चला गया। उसी विच्छिन्न भुजा के साथ-साथ धीरे-धीरे वह मानसिक संतुलन भी खो बैठा। पहले दुख भुलाने के लिए नशे की गोलियाँ खाने लगा और अब नूर मंजिल की शरण गही है। केवल एक हाथ खोकर ही उसने हथियार डाल दिए। इधर चंद्रा, जिसका निचला धड़ है निष्प्राण मांसपिंड मात्र, सदा उत्फुल्ल है, चेहरे पर विषाद की एक रेखा भी नहीं, बुद्धिदीप्त आँखों में अदम्य उत्साह, प्रतिपल-प्रतिक्षण भरपूर उत्कट जिजीविषा और फिर कैसी-कैसी महत्वाकांक्षाएँ।

"मैडम, आप लखनऊ जाते ही क्या मुझे ड्रग रिसर्च इंस्टीट्यूट से पूछकर यह बताएँगी कि क्या वहाँ आने पर मेरे विषय माइक्रोबायोलॉजी से संबंधित कुछ सामग्री मिल सकती है?"

"मैडम आप कह रही थी कि आपके दामाद हवाई के ईस्ट-वेस्ट सेंटर में हैं। क्या आप उन्हें मेरा बायोडाटा भेजकर पूछ सकेंगी कि मुझे वहाँ की कोई फैलोशिप मिल सकता है?"

यहाँ कभी सामान्य-सी हड्डी टूटने पर या पैर में मोच आ जाने पर ही प्राण ऐसे कंठगत हो जाते हैं जैसे विपत्ति का आकाश ही सिर

पर टूट पड़ा है। और इधर लड़की है कि पूरा निचला धड़ सुन्न है, फिर भी बोटी-बोटी फड़क रही है। आजकल वह आई.आई.टी. मद्रास में काम कर रही है।

जन्म के अठारहवें महीने में ही जिसकी गरदन के नीचे का पूरा शरीर पोलियो ने निर्जीव कर दिया हो, उसने किस अद्‌भुत साहस से नियति को अँगूठा दिखा अपनी थीसिस पर डॉक्टरेट ली होगी।

"मैडम, मैं चाहती हूँ कि कोई मुझे सामान्य-सा सहारा भी न दे। आप तो देखती हैं, मेरी माँ को मेरी कार चलानी पड़ती है। मैंने इसी से एक ऐसी कार का नक्शा बनाकर दिया है, जिससे मैं अपने पैरों के निर्जीव अस्तित्व को भी सजीव बना दूँगी। यह देखिए, मैंने अपनी प्रयोगशाला में अपना संचालन कैसा सुगम बना लिया है। मैं अपना सारा काम अब स्वयं निबटा लेती हूँ।"

उसने मुझे तस्वीरें दिखाईं। समस्त सामग्री उसके हाथों की पहुँच तक ऐसे धरी थी कि निचला धड़ ऊपर उठाए बिना ही वह मनचाही सामग्री मेज पर से उतार सकती थी। किन्तु उसकी आज की इस पटुता के पीछे है एक सुदीर्घ कठिन अभ्यास की यातनाप्रद भूमिका। स्वयं डॉ. चंद्रा के प्रोफेसर के शब्दों में, "हमने आज तक दो व्यक्तियों द्वारा सम्मिलित रूप में नोबल पुरस्कार पाने के ही विषय में सुना था, किन्तु आज हम शायद पहली बार इस पी-एच.डी. के विषय में भी कह सकते हैं। देखा जाए तो यह डॉक्टरेट भी संयुक्त रूप से मिलनी चाहिए, डॉ. चंद्रा और उनकी अद्‌भुत साहसी जननी श्रीमती सुब्रह्मण्यम् को। पच्चीस वर्ष तक इस सहिष्णु महिला ने पुत्री के साथ-साथ कैसी कठिन साधना की और इस साधना का सुखद अंत हुआ 1976 में, जब चंद्रा को डॉक्टरेट मिली

माइक्रोबायोलॉजी में। अपंग स्त्री-पुरुषों में, इस विषय में डॉक्टरेट पाने वाली डॉ. चंद्रा भारतीय हैं। जब इसे सामान्य ज्वर के चौथे दिन पक्षाघात हुआ तो गरदन के नीचे इसका सर्वांग अचल हो गया। भयभीत होकर हमने इसे बड़े-से-बड़े डॉक्टर को दिखाया। सबने एक स्वर में कहा आप व्यर्थ पैसा बरबाद मत कीजिए। आपकी पुत्री जीवनभर केवल गरदन ही हिला पाएगी। संसार की कोई भी शक्ति इसे रोगमुक्त नहीं कर सकती।''

सहसा श्रीमती सुब्रह्मण्यम् का कंठ अवरूद्ध हो गया, फिर वे धीमे स्वर में मुझे बताने लगीं, ''मेरे गर्भ में तब इसका भाई आ गया था। इसके भयानक अभिशाप के बावजूद मैंने कभी विधाता से यह नहीं कहा कि प्रभो, इसे उठा लो, इसके इस जीवन से तो मौत भली है। मैं निरंतर इसके जीवन की भीख ही माँगती रही। केवल सिर हिलाकर यह इधर-उधर देख-भर सकती थी। न हाथों में गति थी, न पैरों में, फिर भी मैंने आशा नहीं छोड़ी। एक आर्थोपैडिक सर्जन की बड़ी ख्याति सुनी थी, वहीं ले गई।''

एक वर्ष तक कष्टसाध्य उपचार चला और एक दिन स्वयं ही इसके ऊपरी धड़ में गति आ गई, हाथ हिलने लगे, नन्हीं उँगलियाँ मुझे बुलाने लगीं। निर्जीव धड़ को मैंने सहारा देकर बैठना सिखा दिया। पाँच वर्ष की हुई, तो मैं ही इसका स्कूल बनी। मेधावी पुत्री की विलक्षण बुद्धि ने फिर मुझे चमत्कृत कर दिया, सरस्वती स्वयं ही जैसे आकर जिह्वाग्र में बैठ गई थी। बंगलौर के प्रसिद्ध माउंट कारमेल में उसे प्रवेश दिलाने में मुझे कॉन्वेंट द्वार पर लगभग धरना ही देना पड़ा।

''नहीं मिसेज सुब्रह्मण्यम्'', मदर ने कहा, ''हमें आपसे पूरी सहानुभूति है, पर आप ही सोचिए आपकी पुत्री की व्हील चेयर लेकर कौन पूरे क्लास-रूम में घुमाता फिरेगा?''

"आप चिंता न करें मदर, मैं हमेशा उसके साथ रहूँगी।" और फिर पूरी कक्षाओं में अपंग पुत्री की कुरसी की परिक्रमा मैं स्वयं कराती। वे पीरियड-दर-पीरियड उसके पीछे खड़ी रहती। प्रत्येक परीक्षा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त कर चंद्रा ने स्वर्ण पदक जीते। बी.एस.सी. किया, प्राणिशास्त्र में, एम.एस.सी. में प्रथम स्थान प्राप्त किया और बंगलौर के प्रख्यात इंस्टीच्यूट ऑफ साइंस में अपने लिए स्पेशल सीट अर्जित की। केवल अपनी निष्ठा, धैर्य एवं साहस से पाँच वर्ष तक प्रोफेसर सेठना के निर्देशन में शोधकार्य किया। इसी बीच माता-पिता ने पेंसिलवानिया से व्हील चेयर मँगवा दी, जिसे डॉ. चंद्रा स्वयं चलाती हुई पूरी प्रयोगशाला में बड़ी सुगमता से घूम सकती थी। लैदर जैकेट के कठिन जिरह-बख्तर में कसी उस हँसमुख लड़की को देख मुझे युद्ध-क्षेत्र में डटे राणा साँगा का ही स्मरण हो आता था। क्षत-विक्षत शरीर में असंख्य घाव, आभामंडित भव्य मुद्रा।

"मैडम, आप तो लिखती हैं, मेरी ये कविताएँ देखिए। कुछ दम है क्या इनमें?"

मैंने जब वे कविताएँ देखीं, तो आँखें भर आईं। जो उदासी उसके चेहरे पर कभी नहीं आने पाई, वह अनजाने में उसकी कविता में छलक आई थी। फिर उसने कढ़ाई-बुनाई के सुंदर नमूने दिखाए। लड़की के दोनों हाथ जैसे दोनों पैरों का भी काम करते हों, निरंतर मशीनी खटखट में चलते रहते हैं। जर्मन भाषा में माता-पुत्री दोनों ने मैक्समूलर भवन से विशेष योग्यता सहित परीक्षा उत्तीर्ण की। गर्ल गाइड में राष्ट्रपति का स्वर्ण कार्ड पाने वाली वह प्रथम अपंग बालिका थी। यही नहीं, भारतीय एवं पाश्चात्य संगीत दोनों में उसकी समान रुचि है। अपने अलबम को अपनी निर्जीव टाँगों पर रख वह मुझे अपने चित्र दिखाने लगी। पुरस्कार ग्रहण करती डॉ. चंद्रा, प्रधानमंत्री

के साथ मुस्कराती खड़ी डॉ. चंद्रा, राष्ट्रपति को सलामी देती बालिका चंद्रा और व्हील चेयर में लैदर जैकेट में जकड़ी बैसाखियों का सहारा लेकर डॉक्टरेट ग्रहण करती डॉ. चंद्रा।

"मेरी बड़ी इच्छा थी, मैं डॉक्टर बनूँ। मैं अपंग डॉ. मेरी वर्गीज के सफल जीवन की कहानी पढ़ चुकी थी। परीक्षा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करने पर भी मुझे मेडिकल में प्रवेश नहीं मिला। कहा गया मेरा निचला धड़ निर्जीव है, मैं एक सफल शल्य-चिकित्सक नहीं बन पाऊँगी।" किन्तु डॉ. चंद्रा के प्रोफेसर के शब्दों में, "मुझे यह कहने में रंचमात्र भी हिचकिचाहट नहीं होती कि डॉ. चंद्रा ने विज्ञान की प्रगति में महान योगदान दिया है। चिकित्सा ने जो खोया है, वह विज्ञान ने पाया।"

चंद्रा के अलबम के अंतिम पृष्ठ पर उसकी जननी का बड़ा-सा चित्र जिसमें वे जे.सी. बंगलौर द्वारा प्रदत्त एक विशिष्ट पुरस्कार ग्रहण कर रही हैं- 'वीर जननी' का पुरस्कार। बहुत बड़ी-बड़ी उदास आँखें, जिनमें माँ की व्यथा भी है और पुत्री की भी, अपने सारे सुख त्यागकर नित्य छाया बनी पुत्री की पहिया-लगी कुरसी के पीछे चक्र-सी घूमती जननी, नाक के दोनों ओर हीरे की दो जगमगाती लौंगों, अधरों पर विजय का उल्लास, जूड़े में पुष्पवेणी। मेरे कानों में उस अद्‌भुत साहसी जननी शारदा सुब्रह्मण्यम् के शब्द अभी भी जैसे गूँज रहे हैं, "ईश्वर सब द्वार एक साथ बंद नहीं करता। यदि एक द्वार बंद करता भी है, तो दूसरा द्वार खोल भी देता है।"

अभ्यासमाला

बोध एवं विचार

(अ) सही विकल्प का चयन करो :

1. हम अपनी विपत्ति के लिए हमेशा दोषी ठहराते हैं –
   (क) परिवार वालों को (ख) अपने आप को
   (ग) विधाता को (घ) अपने दुश्मन को

2. लेखिका से मुलाकात के समय डॉ. चन्द्रा किस संस्थान के साथ जुड़ी हुई थी।
   (क) भारतीय विज्ञान संस्थान, मुंबई (ख) आई.आई.टी., मद्रास
   (ग) आई.आई.टी., खड़गपुर (घ) भारतीय आयुर्वेद संस्थान, दिल्ली

3. अपनी शानदार कोठी में उसे पहली बार कार से उतरते देखा, तो आश्चर्य से देखती ही रह गई'– लेखिका कार से उतरती डॉ. चन्द्रा को आश्चर्य से देखती ही रह गई क्योंकि–
   (क) लेखिका को वह कुछ जानी–पहचानी–सी लग रही थी।
   (ख) डॉ. चन्द्रा बहुत ही प्रसिद्ध महिला थी और लेखिका ने अखबार में उसकी तस्वीर देखी थी।
   (ग) शारीरिक रूप से अक्षम होने के बावजूद डॉ. बिना किसी के सहारे कार से उतरकर व्हील चेयर में बैठी और कोठी के अन्दर चली गई।
   (घ) अपने नयी पड़ोसिन के प्रति उसके मन में स्वाभाविक कौतूहल जन्मी थी।

4. 'मैंने इसी से एक ऐसी कार का नक्शा बनाकर दिया है, जिससे मैं अपने पैरों के निर्जीव अस्तित्व को भी सजीव बना दूँगी'– डॉ. चन्द्रा ने नई कार की नक्शा बनायी थी क्योंकि–
   (क) उस समय वे कुछ नया आविष्कार करना चाहती थीं जिससे उन्हें विज्ञान जगत में प्रतिष्ठा मिले।

(ख) डॉ. चन्द्रा चाहती थीं कि कोई उसे सामान्य–सा सहारा भी न दे और इसलिए वे ऐसी कार बनाना चाहती थीं जिसे वे स्वयं चला सकतीं।

(ग) उन्होंने सोचा था कि उस नयी कार चलाने पर उनके पैर धीरे–धीरे ठीक हो जाएँगे।

(घ) उनकी कार माँ को चलानी पड़ती थी और वे माँ को कष्ट देना नहीं चाहती थीं।

5. डॉ. चन्द्रा के एलबम के अंतिम पृष्ठ पर एक चित्र था, जिसमें –

(का) वह डॉक्टरेट की उपाधि ले रही थी।

(ख) उनकी माँ जे.सी. बंगलौर द्वारा प्रदत्त 'वीर जननी' पुरस्कार ग्रहण कर रही थी।

(ग) उनके परिवार को सभी सदस्य थे।

(घ) वह राष्ट्रपति से 'गर्ल गाइड' का पुरस्कार ले रही थी।

(आ) पूर्ण वाक्य में उत्तर दो :

1. हमें कब अपने जीवन की रिक्तता बहुत छोटी लगने लगती है ?
2. डॉ. चन्द्रा के अध्ययन का विषय क्या था ?
3. लेखिका से डॉ. चन्द्रा ने हवाई के ईस्ट–वेस्ट सेंटर में क्या पूछने का अनुरोध किया था ?
4. डॉ. चन्द्रा की स्कूली शिक्षा कहाँ तक हुई थी ?
5. डॉ. चन्द्रा ने किस संस्थान से डॉक्टरेट की उपाधि हासिल की थी ?

(इ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो (लगभग 50 शब्दों में) :

1. लेखिना ने जब डॉ. चन्द्रा को पहली बार कार से उतरते देखा तो उनके मन में कैसा भाव उत्पन्न हुआ था ? अपने शब्दों में लिखो
2. लेखिका यह क्यों चाहती है कि 'लखनऊ का वह मेधावी युवक' डॉ. चन्द्रा के संबंध में लिखी उनकी पंक्तियों को पढ़े ?
3. 'अभिशप्त काया' कहकर लेखिका डॉ. चन्द्रा की कौन–सी विशेषता स्पष्ट करना चाहती है ?
4. डॉ. चन्द्रा की कविताएँ पढ़कर लेखिका की आँखें क्यों भर आईं ?
5. शिक्षा के क्षेत्र में डॉ. चन्द्रा की उपलब्धियों का उल्लेख करो।

6. विज्ञान के अतिरिक्त और किन-किन विषयों में डॉ. चन्द्रा की रुचि थी ?
7. डॉ. चन्द्रा की माता कहाँ तक 'वीर जननी पुरस्कार' की हकदार है ? - अपना विचार स्पष्ट करो।
8. 'चिकित्सा ने जो खोया है वह विज्ञान ने पाया'- यह किसने और क्यों कहा था ?

(ई). आशय स्पष्ट करो (लगभग 100 शब्दों में) :

(क) नियति के प्रत्येक कठोर आघात को अति अमानवीय धैर्य एवं साहस से झेलती वह बित्ते-भर की लड़की मुझे किसी देवांगना से कम नहीं लगी।

(ख) ईश्वर सब द्वार एक साथ बंद नहीं करता। यदि एक द्वार बंद करता भी है, तो दूसरा द्वार खोल भी देता है।

भाषा एवं व्याकरण ज्ञान

1. हिन्दी में अंग्रेजी की स्वर ध्वनि 'ऑ' का आगम हुआ। यद्यपि इसका उच्चारण हिन्दी की ध्वनि 'औ' की भाँति होता है परंतु वास्तव में यह 'ऑ' है 'औ' नहीं। इसमें मुख को थोड़ा गोलाकार करना पड़ता है।
जैसे - काल (समय), कॉल (बुलावा), कौल (शपथ)। तीनों के उच्चारण और अर्थ में अंतर दिखाई देता है।
निम्नलिखित शब्दों को बोलकर पढ़ो :
डॉक्टर, कॉलेज, बॉल, कॉन्वेंट, ऑफ

2. पाठ में कुछ ऐसे शब्द आए हैं जिनका अर्थ एक से नहीं, अनेक शब्दों से अर्थात् वाक्यांश से स्पष्ट हो सकता है।
जैसे - 'जिजीविषा' अर्थात् जिसमें जीने की इच्छा हो।
निम्नलिखित शब्दों के अर्थ वाक्यांश में दो :
अभिशप्त, आभामंडित, सुदीर्घ, निष्प्राण, सहिष्णु

योग्यता-विस्तार

1. 'अपराजिता' शीर्षक पाठ में शारीरिक अक्षमता के बावजूद डॉ. चन्द्रा किस प्रकार एक महत्वपूर्ण व्यक्तित्व के रूप में उभरने में सफल हुई इसके बारे में हम पढ़ चुके। ऐसे ही एक और व्यक्ति हैं डॉ. स्टीफेन हॉकिंग जिन्होंने डॉ. चन्द्रा की तरह ही विज्ञान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इनके बारे में पढ़ो और संक्षेप में लिखकर कक्षा में सुनाओ।
2. शारीरिक रूप से अक्षम लोगों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए सरकार के प्रयास की जानकारी हासिल करो। अपने इलाके में शारीरिक रूप से अक्षम लोगों की सहायता के लिए काम करनेवाली सरकारी तथा गैर सरकारी संस्थाओं के बारे में भी जानने का प्रयास करो।
3. 'शारीरिक अक्षमता प्रतिभा विकास के बाधक तत्व नहीं है'।

   – इस विषय पर कक्षा में एक वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन करो।

शब्दार्थ एवं टिप्पणी

विलक्षण	=	विशेष प्रकार के, अद्भुत
काया	=	शरीर
रिक्तता	=	खालीपन
अंतर्यामी	=	मन की बातें जाननेवाला, भगवान
अकस्मात्	=	अचानक
विधाता	=	ईश्वर
अभिशप्त	=	अभिशाप से ग्रस्त
नतमस्तक	=	सिर झुकाकर
प्रौढ़ा	=	अधेड़ उम्र की महिला
आवागमन	=	आने-जाने का कार्य
नियति	=	भाग्य
आघात	=	चोट

बित्ते भर की	=	छोटी कद की
देवांगना	=	देवलोक में रहनेवाली महिला, देवी, अप्सरा
मेधावी	=	बुद्धिमान
प्रयास	=	कोशिश
विछिन्न	=	अलग
नूर मंजिल	=	लखनऊ में स्थित मानसिक रोगियों का अस्पताल
उत्फुल्ल	=	प्रसन्न
विषाद	=	दुःख, उदासी
उत्कट	=	तीव्र, प्रबल
जिजीविषा	=	जीने की इच्छा
माइक्रोबायोलॉजी	=	विज्ञान की एक शाखा जिसमें सूक्ष्म जीवों का अध्ययन किया जाता है
कंठगत	=	गले में अटके हुए
पक्षाघात	=	लकवा मारने का रोग
पटुता	=	निपुणता
सर्वांग	=	सारे अंग, पूरा शरीर
यातनाप्रद	=	कष्ट देने वाला
कंठ अवरुद्ध होना	=	गला रुँधना, भावातिरेक के कारण बोल न पाना
उपचार	=	इलाज
ऑर्थोपैडिक	=	हड्डियों से संबंधित
निष्ठा	=	दृढ़ता, निश्चयतापूर्वक
जिरह-बख्तर	=	कवच
क्षत-विक्षत	=	बुरी तरह घायल
आभामंडित	=	तेज से भरा हुआ
रंचमात्र	=	जरा भी
व्यथा	=	दुःख, कष्ट
उल्लास	=	खुशी, उमंग